आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : नौंवा | अंक : दसवां | फरवरी-2012

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in, Website : www.ajaibbani.org

संपादक -

प्रेम प्रकाश छाबड़ा

मो. 099 50 55 66 71 (राजस्थान)

मो. 098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उपसंपादक -

नन्दनी

विशेष सलाहकार -

गुरमेल सिंह नौरिया

मो. 099 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी -

मास्टर प्रताप सिंह

ज्योति सरदाना

परमजीत सिंह

मुख्य पृष्ठ सज्जा -

प्रथम सरधारा

05 ● नशा छोड़ें

07 सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

● दीन पर दया

(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

23 ● बलिहार

(वारां - भाई गुरदास जी)

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

(रीबोला - इटली)

सन्त बानी आश्रम - 16 पी.एस., वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039, जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्रीगंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

प्रकाशन दिनांक 1 फरवरी 2012 – 119– **मूल्य – पाँच रुपये**

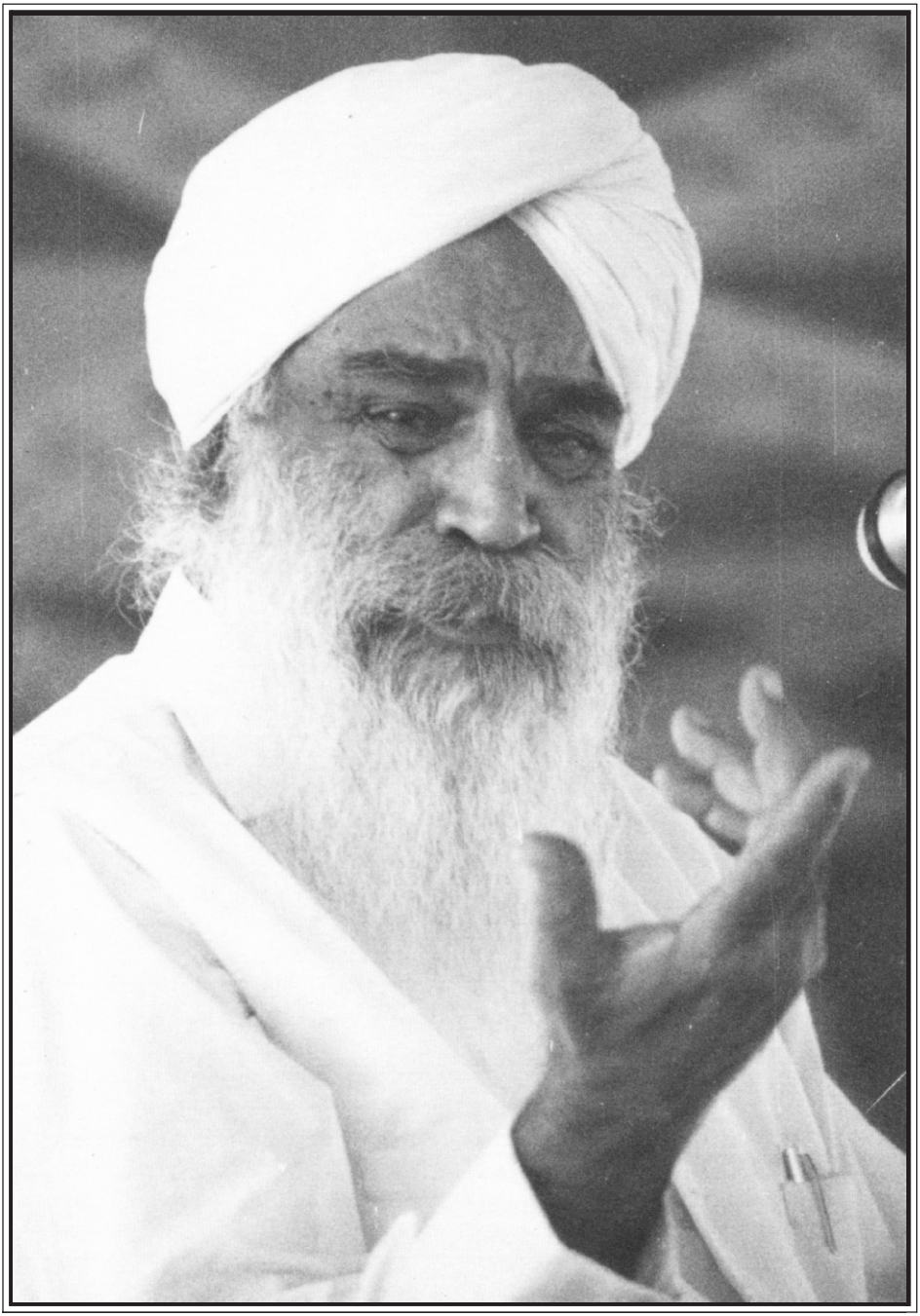

महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा एक महत्त्वपूर्ण संदेश

नशा छोड़ें

हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। माँस खाना अपने नए कर्मों के साथ साँठ-गाँठ करना है। माँस खाने से कठोर कर्मों का चक्कर बनता है क्योंकि हम जो बीजेंगे वही काटेंगे। काँटों का पौधा बीजने पर गुलाब के फूल नहीं मिलते।

सभी प्रकार के नशीले पदार्थ - शराब, अफीम, चरस हमारी चेतना को कम करते हैं और हमें अस्वस्थ करते हैं।

एक प्रेमी: *जो लोग नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं क्या उन्हें अनुभव होते हैं?*

महाराज कृपाल: नशीले पदार्थों का सेवन भ्रम पैदा करता है यह आत्मा की मृत्यु है। नशीले पदार्थों के इस्तेमाल से चेतना कम हो जाती है तो स्वाभाविक ही ऐसे लोगों को निचले मंडलो में जाना पड़ता है। नीचे जाना निश्चित तौर पर पशु के समान है। साँप में भी चेतना होती है लेकिन उसका अलग स्तर है। आदमी में चेतना ज्यादा होती है लेकिन नशीले पदार्थों का इस्तेमाल करने से चेतना पर गहरा असर पड़ता है।

नशीले पदार्थ न केवल आपके स्वास्थ पर बुरा असर डालते हैं बल्कि आपकी आत्मिक तरक्की को नीचे ले जाते हैं। आप कृपया इन नशीले पदार्थों के सेवन को छोड़कर इनके बिना जीना सीखें इन नशीले पदार्थों के सेवन से आप पीछे रह जाते हैं और ये आपको गंभीर दर्द देते हैं।

नशीले पदार्थ मन को बहलाना है। अध्यात्मिकता आत्मा का विज्ञान है। आत्मा शरीर में रहती है। हम गुरु से 'नाम-शब्द' प्राप्त

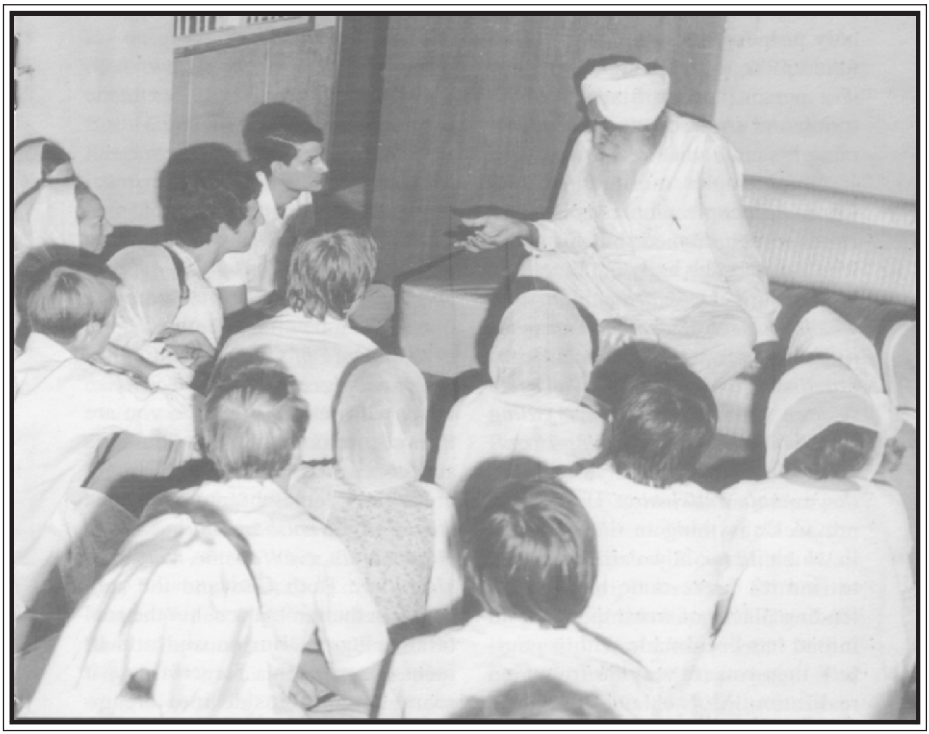

करके अपनी आत्मा को जगाते हैं जोकि परमात्मा के पास वापिस जाने का रास्ता है। अध्यात्मिक दया कोई मजाक का विषय नहीं।

जो लोग बाहर की दवाईयों का आश्रय लेते हैं इससे इन्द्रियों में कंपन पैदा होने से ज्यादा कुछ नहीं। आप याद रखें आपने हमेशा शुद्ध शाकाहारी भोजन खाना है। आपने माँसाहारी खाने और नशीले पदार्थों से बचना है जोकि अंदरूनी तरक्की के लिए ज्यादा जरूरी है। मन को स्थिर करने के लिए चेतना को जगाना है।

अंदरूनी और बाहरी धर्मनिष्ठा, पवित्रता ज्यादा जरूरी है। नशीले पदार्थ हानिकारक होते हैं; ये दिमाग को कमजोर करते हैं। मन में संदेह पैदा करते हैं और व्याकुलता के स्थिर अहसास को धुंधला करते हैं, हमें इनसे बचना चाहिए।

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दीन पर दया

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ जिन्होंने इस गरीब आत्मा के अंदर अपने प्यार का पौधा लगाया। सन्त-महात्मा इस संसार में अपनी मर्जी से नहीं आते, न अपनी मर्जी से 'नाम' का प्रचार करते हैं और न ही अपनी मर्जी से किसी को 'नाम' का भेद देते हैं। किसी जीव में यह ताकत नहीं कि वह अपनी मर्जी से जाकर नाम प्राप्त कर ले; यह सब कुछ परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है।

परमात्मा ने रचना रचते समय ऐसे नियम बनाए हैं जो अपने आप ही चलते रहते हैं जैसे सूरज, चन्द्रमा, सितारे अपने-अपने समय पर ड्यूटी दे रहे हैं इसी तरह मौत और पैदाईश का विधान भी परमात्मा ने खुद ही मुकर्रर किया है, वह अपने आप ही चलता रहता है। जहाँ मौत है वहाँ पैदाईश है, जहाँ पैदाईश है वहाँ मौत है। हम इन सब चीजों को सच मानते हैं और देख भी रहे हैं कि सब कुछ अपने आप ही हो रहा है।

सन्त-महात्मा मालिक के भेजे हुए इस संसार में आते हैं। जिन जीवों का धुर-दरगाह से कर्म बन जाता है वही उनसे फायदा उठा सकते हैं; नहीं तो हम सोचते ही रह जाते हैं कि हम भी परमात्मा को याद करें।

संसार में ऐसी आत्माएं धुर से ही बनी बनाई आती हैं फिर भी वे संसार में आकर परमात्मा के बनाए कानून का पालन करती हैं। शुरू में उन पर भी माया का पर्दा होता है लेकिन वे

अंदर से ही परमात्मा के आगे प्रार्थनाएं करते हैं कि तू हमें ऐसी हस्ती से जोड़ जो हमें तुझसे मिलवा सके, तू हमें क्यों नहीं मिलता! माया का बारीक पर्दा थोड़े से यत्न से ही उतर जाता है उनके अंदर तेल बत्ती सब कुछ होता है सिर्फ जगाने वाला चाहिए फिर भी वे डेमोंस्ट्रेशन देने के लिए हमें पूर्ण होते नज़र आते हैं।

वे बचपन से ही अपने गुरु के आगे प्रार्थना करते हैं कि हे दयालु सतगुरु! हे परमात्मा! मैंने सारे आसरे छोड़ दिए हैं मुझे एक तेरा ही आसरा है। मेरा दुनियां के किसी कर्म-धर्म में भरोसा नहीं रहा; तू मेरे अंदर अपना 'नाम' क्यों नहीं प्रकट करता? नाम पापियों को पुन्नी बनाता है और नीचों को ऊँच करता है। मैंने सुना है कि तू पापियों को तारने वाला है। लोग तुझे पापियों को तारने वाला कहकर दिन-रात प्रार्थनाएं करते हैं कि हमने पापों के पहाड़ इकट्ठे कर लिए हैं तू इन्हें दूर क्यों नहीं करता? अगर हमने पापों के पहाड़ इकट्ठे न किए होते तुझे भी कोई बख्शिंद, पापों को हटाने वाला न कहता।

हे दयालु गुरु कृपाल! मैं बंधन में जकड़ा हुआ हूँ तू मेरे ऊपर से तन, मन का पर्दा उतार दे। तू बख्शिंद है, दयालु है मैं दिन-रात तेरी दया का इंतजार करता हूँ। मैंने सुना है कि तू **दीन पर दया** करता है। दुनियां में मुझसे बड़ा दीन कौन हो सकता है? मैं भिखारी बनकर तेरे दर पर आया हूँ, तू मुझे अपने नाम की भिक्षा क्यों नहीं डालता?

जब बच्चा माता के दूध के लिए, माता के प्यार के लिए रोता है तो माता अपने कारोबार में कितनी भी मस्त क्यों न हो उससे भी रहा नहीं जाता वह अपना सारा कारोबार छोड़कर बच्चे को छाती से लगाकर उसकी जरूरत पूरी करती है।

इसी तरह दयालु सतगुरु में भी बड़ी भारी दया होती है। जब वह रहमत का समुद्र उछलता है तो वह हमारी पुकार को जरूर सुनता है। उससे भी रहा नहीं जाता वह हमारा मिलाप ऐसी हस्ती से करवाता है जिसके अंदर वह प्रकट है; वह हमारी तड़प को देखता है। माथे पर चंदन का तिलक लगाने से विषय-विकार और तृष्णा की अग्नि शान्त नहीं होती। परमात्मा बाहर के भेष पर खुश नहीं होता, वह तो सिर्फ अपनी भक्ति से खुश होता है।

भक्त वह है जो दिन-रात परमात्मा के लिए तड़प रहा है। हम जानते हैं कि हमारा शरीर पानी से साफ होता है साबुन से मैल हट जाती है। आत्मा की मैल सतगुरु का नाम ही उतार सकता है। जिनके अंदर सच्ची तड़प है परमात्मा उनका मिलाप सतगुरु से करवाता है। हम सब कहते हैं कि हम दानी हैं, सच्चे-सुच्चे हैं अगर हम सचमुच में ऐसे हैं तो हमें परमात्मा जरूर मिलेगा। हमारे दिल में परमात्मा के प्यारों के लिए प्यार होना चाहिए। जिसका परमात्मा के साथ प्यार है उसका परमात्मा की खलकत के साथ भी प्यार होता है।

अगर हमें पता लग जाए कि परमात्मा हमारे अंदर है तो क्या हम भेड़-बकरी को मार सकते हैं? अगर हमने परमात्मा को अपने अंदर देख लिया हो तो क्या हम किसी को हरिजन या चमार कह सकते हैं! परमात्मा सबके अंदर बैठा है **दीन पर दया** करता है अगर हम किसी के साथ नफरत करके लोगों को यह दिखाते हैं कि हम भक्त हैं परमात्मा के प्यारे हैं तो हम अपने साथ धोखा कर रहे हैं। जो हमारे अंदर बैठा है वह कभी धोखा नहीं खाता है। यह हमारे सतगुरु कुलमालिक की दया है जिन्होंने हमारे ऊपर दया की, हमें अपनी पहचान और अपनी सेवा दी।

जब परमात्मा मेहर करता है तो हमें इंसान का जामा देता है यह एक कीमती तोहफा है। हम पशु-पक्षियों के जामें में परमात्मा से मिलाप नहीं कर सकते अगर हम इस मौके को खो देते हैं तो पता नहीं कहाँ जन्म होगा हम भूले-भटके परमात्मा से मिल नहीं सकेंगे। गुरु अर्जुनदेव जी ने गुरु भक्ति पर बहुत जोर दिया है। गुरु अर्जुनदेव का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है:

कोटि ब्रह्मंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे।
प्रतिपालै नित सारि समालै इकु गुनु नही मूरखु जाता रे।।

आप प्यार से कहते हैं कि हम तो सिर्फ इस थोड़ी सी रचना को ही देख सकते हैं अगर हमें इससे ज्यादा दूर देखना है जहाँ तक हमारी आँखों की रेंज है तो हम किसी दूरबीन की सहायता लेते हैं। दूरबीन की भी रेंज है वह इस दुनियां के पदार्थ को सात आठ सौ गुना बड़ा करके दिखा सकती है लेकिन सन्तों की सोच इससे भी बहुत ऊँची और सुच्ची है।

करोड़ो खंड-ब्रह्मांड हैं। हमें तो एक खंड की भी समझ नहीं होती। परमात्मा एक ब्रह्मांड के जीवों का दाता ही नहीं, वह सबका दाता है। ऐसा नहीं कि स्वर्ग वाले जीवों का परमात्मा कोई और है, नर्क वाले जीवों का परमात्मा कोई और है। बैकुंठ वाले जीवों का या जो आत्माएं सच्चखंड में जाकर हंस-गति को प्राप्त कर लेती हैं उनका दाता एक ही है।

कर्मों के कारण ही जीव नर्क में सड़ रहे हैं कराह रहे हैं। अच्छे कर्म करके जीव स्वर्ग में जा रहे हैं। 'शब्द-नाम' की कमाई करने वाले हंस-गति को प्राप्त करके सच्चखंड में जाकर परमात्मा के साथ इस तरह मिल जाते हैं जैसे पानी, पानी में मिल जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

ज्यों जल में जल आए खटाना त्यों ज्योति में ज्योत मिलाना।

हमारी आत्मा जोकि छोटी ज्योत है, बड़ी ज्योत परमात्मा में जाकर ऐसे मिल जाती है जैसे गलियों का गंदा पानी गंगा में जाकर गंगा ही कहलाता है। इसी तरह हमारी आत्मा जन्म-जन्मांतरों में कष्ट उठाती हुई, पापों से लिपटी हुई जब 'नाम' के साथ जुड़ती है तो साफ होकर परमात्मा ही कहलाती है।

प्यारेयो! जिसने परमात्मा को देख लिया है उसका हर जाति के साथ प्यार होता है। औरत, मर्द,अमेरिका, यूरोप और हिन्दुस्तान में रहने वालों का एक ही परमात्मा है। जब परमात्मा एक है तो उसके मिलने का साधन और तरीका भी एक है। परमात्मा किसी मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारे में नहीं रहता। सच्चे से सच्चा मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारा हमारा शरीर है लेकिन हम भूल जाते हैं।

परमात्मा ने जो हरि मंदिर बनाया है हम उसकी कद्र नहीं करते उसे वहाँ नहीं खोजते। हम परमात्मा को अपने हाथों से बनाए हुए मंदिर, मस्जिद में खोज रहे हैं अगर कोई भूल से हमारे बनाए मंदिर, मस्जिद की दीवार तोड़ दे तो हम परमात्मा के बनाए हुए लाखों, करोड़ों मंदिरों को गिरा देते हैं।

सन्त हमें प्यार से कहते हैं कि शहीद भलाई का काम करते हैं। लोगों के गले काटकर या परमात्मा के मंदिरों को गिराकर कोई शहीद नहीं बनता अगर ऐसे कोई शहीद बनता होता तो इससे सस्ता सौदा ओर क्या हो सकता है?

हम सब सोचते हैं कि हम अपनी परवरिश खुद कर रहे हैं दिन-रात अपना फिक्र करते हैं। हम बैंक में कितना बेलेंस रखते हैं और अपने लिए सामान इकट्ठा करने में लगे हुए हैं।

जब हम अपना इंतजाम खुद करते हैं तो परमात्मा भी हमारी तरफ से बेफिक्र हो जाता है। आप जानवरों, कीड़ों, पतगों की तरफ देखें उनका कितना बैंक बेलेंस है, कितने मकान हैं क्या परमात्मा उन्हें रोजी नहीं देता? महात्मा कहते हैं कि हमारी प्रतिपालना कोई और कर रहा है।

धन्ना भक्त कहता है, ''कीड़ा पत्थर में होता है जहाँ किसी तरफ से रास्ता नहीं निकलता परमात्मा उसे वहाँ भी रोजी देता है। पक्षी पेड़ पर रहते हैं बारिश हो रही होती है लेकिन वह रोजी देने वाला सबको रोजी देता है।''

अगर कोई रिश्तेदार हम पर थोड़ा सा उपकार कर दे तो हम उसका धन्यवाद करते हैं। परमात्मा हमें तन, मन, धन और यह शरीर देकर खुद इसके अंदर बैठा है इसलिए लोग हमारी इज्जत करते हैं, हमारे साथ प्यार करते हैं लेकिन जब परमात्मा इस शरीर में से अपना आप उठा लेता है तो कोई इस शरीर की कौड़ी देने के लिए भी तैयार नहीं होता। औरत सारी जिंदगी पति का आदर करती है, पति औरत की इज्जत करता है। हम जिनसे प्यार करते हैं उनका विछोड़ा एक मिनट भी सहन नहीं कर सकते लेकिन जब परमात्मा उनमें से निकल जाता है तो हम फौरन उन सज्जनों को आग या मिट्टी के सुपुर्द कर देते हैं। परमात्मा की वजह से इस शरीर की कीमत है लेकिन हम परमात्मा को विसार देते हैं।

हरि आराधि न जाना रे।। हरि हरि गुरु गुरु करता रे।।

आप बड़े प्यार से कहते हैं कि हमें समझ नहीं आती क्योंकि हमने 'नाम' देखा नहीं होता, सुना होता है। नाम सतगुरु ने

देखा होता है; पैदा किया होता है। जिसने गुरु को समझ लिया उसकी हस्ती में 'नाम' परमात्मा सभी आ गए। मैं दिन-रात सोता-जागता, उठता-बैठता गुरु गुरु ही करता हूँ।

गुरु अर्जुनदेव जी का अपने गुरु के साथ दुनियावी रिश्ता पिता-पुत्र का था लेकिन आपने अपने पिता को दुनियावी पिता नहीं समझा परमात्मा का रूप समझा। शब्द की धार उनमें ही उतरती है जो सतवचन के अधिकारी होते हैं। सतवचन का अधिकारी बनना बहुत ही मुश्किल होता है।

बाबा बिशनदास ने मेरी जिंदगी बनाई। आप कहा करते थे, ''मैं बाबा अमोलकदास का उस तरह का अधिकारी नहीं बन सका जैसा बनना चाहिए था।'' हांलाकि बाबा बिशनदास ने अमोलकदास की तालीम को प्रेक्टिकल किया था फिर भी बाबा बिशनदास में इतनी नम्रता थी।

प्यारेयो! अधिकारी बनना आसान काम नहीं है। पति-पत्नी में कितना प्यार होता है मामूली बात पर हमारे झगड़े होते रहते हैं। किसी की मर्जी के मुताबिक चलना कोई आसान काम नहीं, कोई भाग्यशाली जीव ही ऐसा कर सकता है। गुरु अर्जुनदेव जी ने अपने पिता को कुलमालिक समझा, आपके पिता ने जो कहा आपने वही किया।

महाराज सावन सिंह जी मिसाल दिया करते थे कि एक गांव में कोई महात्मा आकर रहने लगा जिसे शीतल दास कहते थे। सुथरा एक नाम की कमाई करने वाला अभ्यासी फकीर हुआ है। वह गुरु हरगोविंद के समय से गुरु गोबिंद सिंह जी के समय तक रहा है, उसने काफी लम्बी उम्र भोगी। सुथरे ने सोचा देखें तो सही इस महात्मा में नाम वाले गुण हैं या नहीं। सुथरे ने उस

महात्मा के पास जाकर कहा, ''हरिहर सन्तों!'' महात्मा ने कहा, ''हरिहर।'' सुथरे ने कहा, ''कुछ अग्नि चाहिए।'' महात्मा ने कहा, ''नहीं है।'' सुथरे ने फिर कहा, ''थोड़ी सी अग्नि दे दो।'' महात्मा ने कहा, ''तुझे कहा है कि अग्नि नहीं है।'' जब तीसरी बार सुथरे ने यही कहा तो महात्मा चिमटा लेकर उसके पीछे पड़ गया। सुथरा हँसकर कहने लगा कि तू तो कहता था कि मेरे पास अग्नि नहीं है; अब तो भाँभड़ मच रहे हैं।

प्यारेयो! बहुत सी बातें महसूस करने वाली होती हैं। शीतलदास बनना बहुत मुश्किल है। मैंने पहले भी बताया है कि माथे पर चंदन का तिलक लगाने से हमारे अंदर के विषयों की जहर शीतल नहीं होती, यह प्रभु भक्ति से ही शीतल होती है।

हरि जीउ नामु परिओ रामदासु।।

आप कहते हैं कि इस समय संसार में परमात्मा का नाम रामदास हो गया है अगर हम गुरु को परमात्मा कह लें तो हम कोई ऐब नहीं कर रहे। सहजो बाई कहती हैं:

राम तजूँ पर गुरु न बिसारु, गुरु के सम हरि को न निहारु।
हरि ने जन्म दिया जग माही, गुरु ने आवागमन चुकाही।
हरि ने पाँच चोर दिए साथा, गुरु ने लेई छुड़ाए अनाथा।
हरि ने कुटुम्ब जाल में गेरी, गुरु ने काटी ममता बेड़ी।

मैं राम को भूल सकती हूँ, गुरु को नहीं बिसार सकती। मैं गुरु के बराबर हरि को नहीं कह सकती। ऐसा नहीं कि वह हरि भगवान का अनादर कर रही हैं। सहजोबाई कहती है कि हरि ने मुझे संसार में जन्म दिया यहाँ दुःख और मुसीबतें ही हैं। हमारा भूला हुआ मन हमें ऐसे ही कह देता है कि हम सुखी हैं पता नहीं दो मिनट में क्या हो जाना हैं! शादी होती है मन फूला नहीं

समाता, बाजे बजते हैं; जब थोड़े दिनों बाद उस घर में खटपटी हो जाती है बीवी से अनबन हो जाती है फिर क्या होता है? लड़का पैदा होता है घर में पार्टियाँ करते हैं अगर परमात्मा उसे वापिस बुला ले तो वही घर नर्क बनकर रह जाता है।

इसलिए आप प्यार से कहते हैं हमें काम, क्रोध की जहर चढ़ी हुई है अगर इस जहर से छुटकारा पाएं तो पता लगे कि ये चोर किस तरह दिन-रात हमें जलील कर रहे हैं। यहाँ न औरत सुखी है न मर्द सुखी है। गुरु तब छुड़वाता है जब हम अनाथ बनते हैं, हर तरफ से ख्याल हटाकर गुरु की तरफ लगा लेते हैं। अनाथ वह है जिसका परमात्मा के अलावा कोई नहीं।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो पानी पाईप के ज्यादा सुराखों में से जाता है उसकी उतनी जबरदस्त धार नहीं होती जितनी कि सारे सुराखों को बंद करके एक सुराख में से पानी निकालें।''

दीन दइआल कृपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे।।

मैंने शुरू में बताया था कि हे कृपाल! मैंने सुना है कि तू **दीन पर दया** करता है। मुझसे बड़ा दीन कौन है? तू मुझे दर्शन क्यों नहीं देता अगर हम पापों के पहाड़ इकट्ठे न करते तो तुझे बख्शनहारा कौन कहता?

परमात्मा सदा ही दयाल है। कोई दीन बने वह दया करता है। कोई भी घट परमात्मा से सूना नहीं है। परमात्मा चोरों-ठगों और सन्तों-महात्माओं में भी है; फर्क इतना है कि परमात्मा चोरों-ठगों में छिपा बैठा है और सन्त-महात्माओं में प्रकट है।

अगर पाँच साल का बच्चा किसी खेत की रखवाली कर रहा हो तो हम वहाँ से खरबूजा तोड़ने की हिम्मत नहीं करते कि हमें इंसान का बच्चा देख रहा है वह कुछ कहेगा। जब हम यह कहते हैं कि परमात्मा हर जगह है हमें देख रहा है तो क्या हम कोई पाप कर लेंगे लेकिन जब मौका लगता है हम सब कुछ भूल जाते हैं। वह कृपाल है कृपा करता है **दीन पर दया** करता है सब घट में बैठा है फर्क इतना ही है कि महात्मा ने उसे प्रकट कर लिया होता है और हम अभी प्रकट करने में लगे हुए हैं।

पेखत सुनत सदा है संगे मैं मूरख जानिआ दूरी रे।।

हम दुनियादार लोग कर्मकांड की बहुत महिमा गाते हैं। कर्मकांड को बहुत ऊँचा समझते हैं लेकिन महात्मा ने सब आडंबर करके देखे होते हैं। वे जानते हैं कि कर्मकांड छिलका है, छिलके से हम गूदे वाला रस नहीं ले सकते।

परमात्मा हमारी हर हरकत को देखता है वह सदा हमारे साथ है लेकिन हम कभी सिर मुंडवा लेते हैं, कभी बाल रख लेते हैं, कभी कान फड़वा लेते हैं कि शायद ऐसा करने से परमात्मा मिलेगा! कभी घर-बार, पुत्र-पुत्रियों को छोड़कर पहाड़ों में चले जाते हैं कि परमात्मा उस पहाड़ी पर मिलेगा! कभी गुरुद्वारे में जाकर भाई बन जाते हैं, कभी मंदिर में जाकर पुजारी बन जाते हैं, कभी गिरजाघर में जाकर सोचते हैं कि शायद परमात्मा हमारे अंदर नहीं है! कभी दिन-रात तोते की तरह पाठ करने लग जाते हैं,सोचते हैं कि परमात्मा सोया हुआ है! कबीर साहब कहते हैं:

मुल्ला मनारे क्या चढ़े साईं न बहरा होय,
जां कारण तू बांग दे दिल ही भीतर जोय।

आप प्यार से कहते हैं कि परमात्मा तो सदा जाग रहा है। तू दिन-रात जिसे बाहर ढूंढ रहा है वह तो तेरे अंदर है; वह सोया हुआ नहीं है, बहरा नहीं है। जब गर्म ख्यालों वाले लोग बाजे-गाजे बजाते तो हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी कहते, ''हाँ भाई! रब को जगाने वाले आ गए हैं।''

सुत्ती पई प भाग सब सुणे न बाँगे कोय।

फरीद साहब अपनी बानी में लिखते हैं:

उठ फरीदा सुत्तया झाड़ू दे मसीत,
तू सुत्ता रब जाग दा तेरी डाडे केही प्रीत।

हमारा शरीर सच्ची मस्जिद है इसमें सिमरन का झाड़ू लगाना है, सिमरन का झाड़ू सारा गंद बाहर करके आत्मा की सफाई करता है। परमात्मा सोया नहीं हम सोऐ हुए हैं लेकिन हम दावा करते हैं कि हम परमात्मा के साथ प्यार करते हैं।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''जो इंसान से नफरत करता है वह परमात्मा के साथ प्यार करने का दम कैसे भर सकता है?''

हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज में इतनी नम्रता और आजजी है कि सब कुछ अपने अंदर प्रकट करके कहते हैं, ''परमात्मा बेअंत है, मैं तो समझाने के लिए उनका वर्णन एक दायरे में रहकर कर रहा हूँ। पता नहीं वह मेरे साथ क्या करेंगे क्योंकि वह तो कुलमालिक और खंडो-ब्रह्मांडो के वालि हैं।''

करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''मैं अपने गुरु के आगे विनती करता हूँ कि मैं मूर्ख हूँ, मैं नासमझ हूँ। मुझे विवेक बुद्धि दें।'' कोई मूर्ख बनने के लिए तैयार है? हम सभी कहते हैं कि हम समझदार हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नानक गुरु न चेतनी मन अपने सुचेत।
सुट्टे तिल बवाड़ ज्यों सुन्ने अंदर खेत।
खेतां अंदर छुट्टिऐ कहो नानक स्यों नाहें।
फलिए फुलिए बपड़े भी तन विच स्वाहे।

'नाम' लिया नहीं, पता नहीं कि गुरु क्या हस्ती है! और हम अपने मन में सेचत हुए बैठे हैं। जब मौत के प्यादे आते हैं तब क्या हालत होती है? बिमारियां मौत के प्यादे ही होते हैं। जब काल आकर छाती पर बैठ जाता है तब कहते हैं कि लड़को को बुलाओ। क्या लड़के आकर फूँक मारेंगे? यह उपाय तो खुद ही करना था, अब लड़के क्या कर लेंगे।

मैं तोता सिंह की मिसाल दिया करता हूँ। कई लोगों ने उसे देखा भी है। तोता सिंह मुकदमेबाज था उसके पड़ोसी ने मेरी बाँह पकड़कर कहा था, ''अगर परमात्मा इसका उद्धार कर देगा हम तो तरे तराए हैं।'' मैंने उससे कहा, ''अगर 'नाम' लेकर इसने कोई पाप किया है तो परमात्मा इसका उद्धार नहीं करेगा अगर इसने सब कुछ छोड़ ही दिया है तो परमात्मा इसका उद्धार क्यों नहीं करेगा।''

जब तोता सिंह का अंत समय आया वह खास बीमार नहीं था। उसका लड़का गाय लाकर उससे दान करवाने लगा ताकि उसका पिता आराम से शरीर छोड़ दे। तोता सिंह ने कहा, ''क्या मुझसे कोई बुरा काम हो गया है जो मेरे हाथ से गाय दान

करवाने लगा है अगर तू ज्यादा धर्मात्मा है तो तूने जो मेरे पन्द्रह सौ रूपये देने हैं वह दे दे।''

मालिक की मौज हुई तोता सिंह ऐसी बातें करता हुआ बहुत आसानी से शरीर छोड़ गया। मैं उस समय 16 पी.एस. में ही था यहाँ से कई प्रेमी मेरे साथ गए। मैंने पाठी से कहा कि वहाँ मौत है कोई अच्छा सा गुरुबानी का शब्द बोल। पाठी ने शब्द बोलाः

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होय,
जुग भवें चार जीविए बिना भजन नहीं छुटकारा।

जब हम उनके दरवाजे पर पहुँचे तो वे लोग शब्द रहे थेः

अज दा दिहाड़ा सानू भागां नाल आया ऐ।

मैंने उनसे कहा कि तुम यह शब्द क्यों बोल रहे हो यहाँ कई नए लोग भी हैं जो बुरा मानेंगे। उस घर में सतसंगी लड़के ने सतसंग रखवाया। जो लड़का गाय से मुक्ति करवाना चाहता था उसने अखंड पाठ रखवाया और बीबियों ने अपना रोने-धोने का अखंड पाठ रखा।

जिस आदमी ने मुझसे यह कहा था कि देख लेंगे जब तोता सिंह मुक्त होगा! उसने मेरे पास आकर कहा कि हमें अब पता चला है कि 'नाम' क्या चीज है और गुरु क्या चीज है? उसने चुप करके 'नाम' ले लिया।

मैं मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे।।

आप कुलमालिक होकर भी अपने आपको मूर्ख कहते हैं। आपके अंदर नम्रता टपकती है। आप ऐसा सिर्फ हमारे अंदर नम्रता पैदा करने के लिए कहते हैं कि मैं अकेला ही नहीं करोड़ो अपराधी उसके दर पर आकर तर जाते हैं।

कपड़े रंगने वाले के पास चाहे जितने भी कपड़े ले जाएं वह मना नहीं करता। उसे अपने कर्त्तव्य पर मान होता है इसी तरह सन्त-सतगुरु को अपने 'नाम' के ऊपर मान होता है कि हम जिसके अंदर नाम रखेंगे उसकी मैल दूर हो जाएगी।

गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जिन्होंने पूरे गुरु की महिमा को सुन लिया या उसे आँखों से देख लिया वह माता के पेट में नहीं आता।''

मैं जब पिछले टूर पर अमेरिका गया। सन्तबानी आश्रम में बर्गिन्स परिवार मुझसे मिलने आया। मेरा इस परिवार के साथ अच्छा प्यार और लगाव है, यह परिवार बड़े महाराज का नामलेवा हैं। इस परिवार के लोगों में से एक भाई ने महाराज कृपाल से कहा कि मैं आपको गुरु नहीं मानता। महाराज कृपाल ने हँसकर कहा, ''तू नहीं मानता लेकिन हम तुझे मानते हैं क्योंकि तू हमारे पास मिलने के लिए आया है।'' बुजुर्ग माता ने मुझे बताया कि जब मेरे भाई का अंत समय आया तो उसने मुझे अस्पताल में बताया, ''मुझे आज पता लगा है कि गुरु क्या होता है?'' उस माता के बताने का भाव यह था कि तेरे गुरु ने मेरे भाई की रक्षा की। सन्तों में कितनी नम्रता होती है।

मैं जब पहले टूर पर गया। वहाँ एक वकील आया। जिसकी पत्नी नामलेवा थी लेकिन वह नामलेवा नहीं था। उसने आकर काफी बातें की और कहा कि मैं किसी को माफ नहीं करता, आपको तो मैं माफ करता ही नहीं। बात तो पहले पप्पू ही समझता था। पप्पू घबराया कि यह किस तरह का इंसान है। पप्पू को

परेशान देखकर मैंने उससे पूछा, ''यह क्या कह रहा है?'' पप्पू ने मुझे बताया तो मैंने हँसकर कहा, ''माफी वही दे सकता है जिसके पास माफी हो। माफी सन्तों के दरबार में होती है।''

जब उस वकील ने सुना कि ये मेरे साथ कितना प्यार भरा सलूक करते हैं उसके बाद उसने सदा अपनी पत्नी को सतसंग में भेजा। उसने हैदराबाद में आठ पहर के लिए अपनी पत्नी को दर्शन करने के लिए भेजा। उसकी पत्नी ने बताया कि वह बहुत बीमार है उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं। मैंने उसकी धर्मपत्नी को वापिस जाने के लिए कहा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जे कोई जी कहे उनको तो यम की तलब न होई।

अगर कोई सतगुरु को 'जी आया नूं' भी कह दे तो वह यमों के दण्ड से बच जाता है लेकिन हमारा मन हमारे अंदर बैठा है यह कब ऐसा कहने देता है। मन के पीछे लगकर ही हम लोगों ने सन्तों की खाल उतरवा दी। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज को गैरमनुखी कष्ट दिए गए। सन्तों के अंदर यह ताकत है कि सन्त अपने आपको छोटा जाहिर करते हैं।

इस शब्द में गुरु अर्जुनदेव जी ने हमें समझाया है कि परमात्मा बड़ा है दयालु है वह **दीन पर दया** करता है जिनके अंदर परमात्मा प्रकट हो जाता है उनके अंदर भी वही गुण होते हैं। अंदर से हमारा दृष्टिकोण ही बदल जाता है। हंस की चोंच की तासीर ही ऐसी है कि दूध, पानी अलग हो जाता है इसी तरह महात्मा की वृत्ति अंदर से ही बदल जाती है।

इसलिए हमें भी चाहिए गुरु अर्जुनदेव जी कहने के मुताबिक 'शब्द-नाम' की कमाई करें अपने जीवन को पवित्र बनाएं।

***

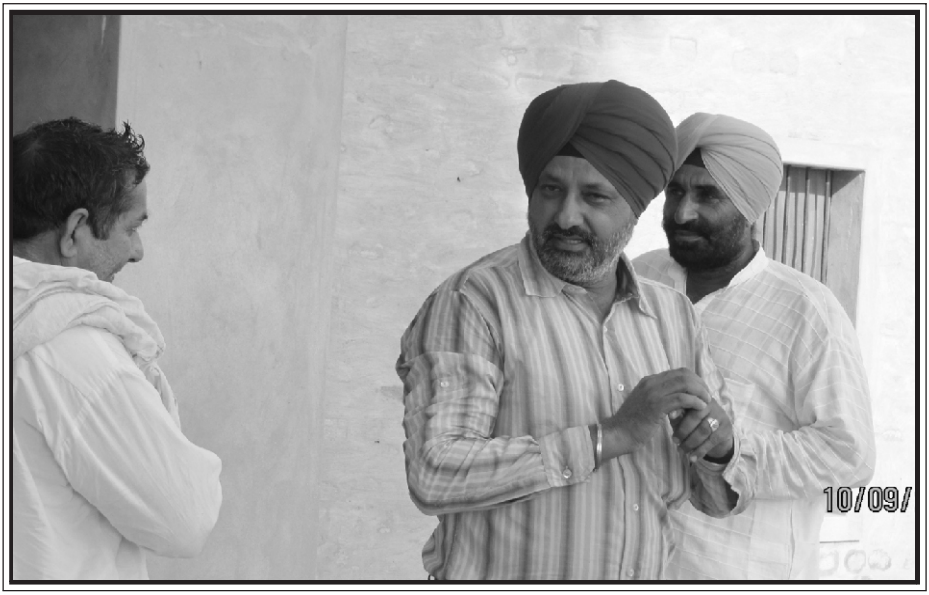
10/09/

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

बलिहार

वारां - भाई गुरदास जी

इटली

सतसंगी, शिष्य सबका मतलब एक ही है। जो अपने आपको गुरु के चरणों में अर्पित कर देता है, भजन-सिमरन करते हुए गुरु की हिदायतों का पालन करता है वही गुरु का शिष्य कहलाता है।

मैं सतसंग शुरू करने से पहले आपको एक कहानी सुनाता हूँ, यह कहानी मैंने पहले भी सुनाई है: होशियारपुर (पंजाब) में गुरु अर्जुनदेव जी का एक नामलेवा शिष्य भाई तिलकु रहता था। उन दिनों होशियारपुर योगियों, सन्यासियों, साधुओं का मुख्य केन्द्र था। वहाँ एक योगी भी रहता था जिसने बहुत अभ्यास करके रिद्धियों-सिद्धियों की शक्तियाँ प्राप्त कर ली थी। वह योगी लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए चमत्कार किया करता था।

एक बार उस योगी ने ढ़िढोरा पिटवाया कि जो एक बार उसके दर्शन कर लेगा उसे एक साल के लिए स्वर्ग मिलेगा। लोगों के लिए यह अच्छा सौदा था। जब लोग देखते हैं कि कोई चीज़ सस्ती या मुफ्त मिल रही है तो वे क्यों नहीं लेना चाहेंगे?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर यह ढ़िढ़ोरा पिटवा दिया जाए कि अमेरिका में जमीन-जायदाद मुफ्त मिलेंगी तो यहाँ के लोग अपने घर-बार छोड़कर अमेरिका चले जाएंगे। बिना मेहनत किए हमें कुछ मिलता है तो हम वह लेना चाहते हैं।''

जब लोगों ने योगी का ढ़िढोरा सुना तो जो लोग योगी के दर्शनों में रूचि नहीं रखते थे वे भी योगी के दर्शन करने गए क्योंकि एक साल के लिए स्वर्ग मिल रहे थे। भाई तिलकु 'शब्द-नाम' की भक्ति करने वाला गुरु का प्रेमी शिष्य था, वह योगी के दर्शन करने नहीं

गया। वह लोगों को सतसंग और गुरु के बारे में बताया करता था जो लोग उसकी बात सुनते थे वे योगी के पास नहीं गए।

योगी ने भाई तिलकु को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए बहुत कुछ किया लेकिन वह सब बेकार गया क्योंकि तिलकु को अपने गुरु पर पूर्ण विश्वास था। योगी ने अपने आस-पास के लोगों से पूछा, ''क्या इस गाँव के सब लोगों ने मेरे दर्शन कर लिए हैं?'' उन लोगों ने बताया कि कई लोगों ने एक बार की बजाय दो बार भी दर्शन किए हैं लेकिन भाई तिलकु योगी के दर्शन करने नहीं आया।

योगी ने कहा, ''शायद उसे इस बात का पता नहीं चला होगा आप लोग जाकर उसे बताएं कि मेरा दर्शन करने पर एक साल का स्वर्ग मिलेगा।'' उन लोगों ने भाई तिलकु के घर जाकर उसे बताया। भाई तिलकु ने कहा, ''यह मेरा रास्ता नहीं, मैंने स्वर्ग नहीं सच्चखंड जाना है। मेरा और योगी का रास्ता अलग है इसलिए मैंने योगी के दर्शन नहीं करने।'' उन लोगों ने योगी के पास वापिस आकर भाई तिलकु ने जो कुछ कहा वह सब बता दिया।

योगी ने भाई तिलकु को परेशान और प्रभावित करने के लिए अपनी सारी रिद्धि-सिद्धियाँ लगा दी लेकिन भाई तिलकु पर कोई असर नहीं हुआ। भाई तिलकु अपने आपको घर में बंद करके सिमरन करने लगा; उसने अपने आपको नाम के साथ जोड़ लिया। रिद्धियां-सिद्धियाँ नाम की भक्ति करने वाले पर कोई असर नहीं कर सकती, सतगुरु के सेवक के पास मौत का फरिश्ता भी नहीं आ सकता। सेवक को सदा नाम की कमाई में लगे रहना चाहिए और उसे अपने गुरु पर भरोसा करना चाहिए।

जब योगी की रिद्धियों-सिद्धियों का तिलकु पर असर नहीं हुआ तो उसने लोगों से कहा कि तिलकु को जाकर बताएं कि उसके लिए खास रियायत है अगर वह मेरे दर्शन करेगा तो उसे दो साल के लिए

स्वर्ग मिलेंगे लेकिन योगी का यह प्रस्ताव भी तिलकु को ललचा नहीं सका। वह अपना भजन-सिमरन करता रहा। उसके दृढ़-निश्चय और सतगुरु में विश्वास देखकर योगी, भाई तिलकु से मिलने के लिए चलकर आया। तिलकु ने योगी को देखकर अपने घर का दरवाजा बंद कर लिया। योगी ने कहा, ''दरवाजा खोलो मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ। मैं भी तुम्हारे गुरु के पास जाऊँगा और 'नाम' लूँगा। अब मुझे मालूम हो गया है कि तुम्हारा रास्ता ही सच्चा रास्ता है।''

योगी, भाई तिलकु के साथ गुरु अर्जुनदेव जी के दर्शनों के लिए गया। उसने गुरु अर्जुनदेव जी से 'नाम' लेकर भजन-अभ्यास किया और गुरु में भरोसा करके अच्छा अभ्यासी बना।

जो महात्मा अंदर जाते हैं वे हमें स्वर्ग और नर्क के बारे में बताते हैं कि स्वर्ग और नर्क काल द्वारा बनाए गए सूक्ष्म मंडल हैं। वहाँ आत्माएं संसार में किए गए अच्छे और बुरे कर्मों का फल भोगती हैं। जो संसार में अच्छे कर्म करते हैं दान-पुण्य करते हैं दूसरों की भलाई के लिए यहाँ अच्छा जीवन बिताते हैं उन्हें अच्छे कर्मों के ईनाम के रूप में स्वर्ग में भेजा जाता है; वे वहाँ आराम से जिंदगी जीते हैं लेकिन वहाँ का समय सीमित होता है।

जब वह सीमित समय खत्म हो जाता है उन्हें फिर मृत्युलोक में भेज दिया जाता है। उनको फिर अच्छे और धनवान परिवारों में जन्म दिया जाता है जहाँ उन्हें अच्छा घर, धन और सुख-सुविधाएं मिलती हैं लेकिन मुक्ति 'नाम' में है अगर वे पूर्ण गुरु के पास पहुँच जाएं तो गुरु उन्हें नाम दे देते हैं तभी उनको मुक्ति मिल सकती है, नहीं तो अपने कर्मों के मुताबिक उन्हें फिर एक जन्म दिया जाता है ताकि वे अपने सच्चे घर जाने का रास्ता तलाश कर सकें।

उसी तरह नर्क एक बुरी जगह होती है जहाँ दुःख ही दुःख होते हैं। जो लोग इस संसार में बुरे कर्म करते हैं अत्याचारी होते हैं

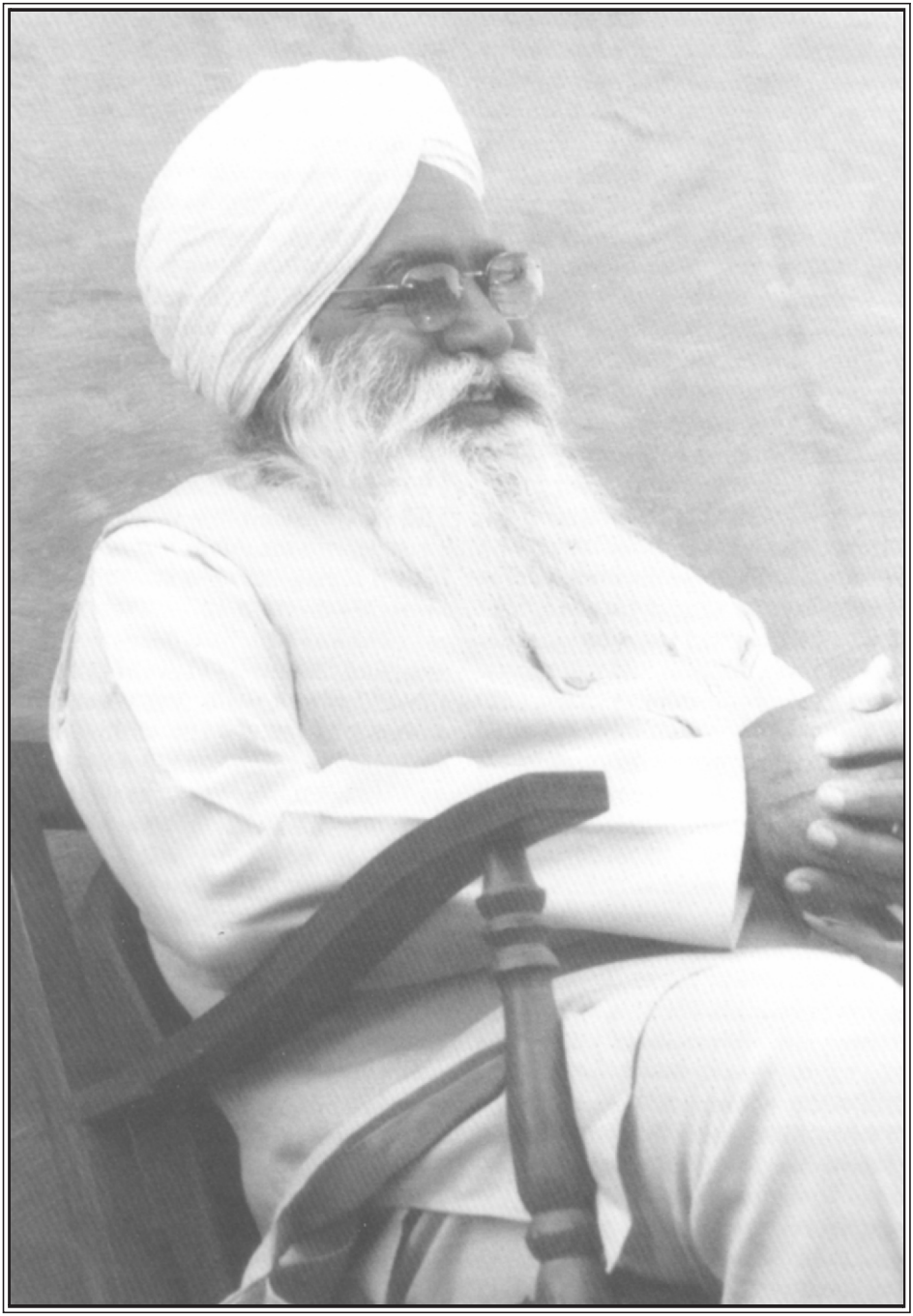

दूसरे लोगों को तकलीफें देते हैं उन्हें नर्क में भेजा जाता है। ऐसे लोग यहाँ तकलीफें उठाते हैं। नर्क का समय भी निश्चित होता है जब वे अपने कर्मों का भुगतान कर लेते हैं तो उन्हें भी कम से कम एक बार इंसानी जामें का मौका दिया जाता है।

जो लोग स्वर्ग से आते हैं ठीक उसके उलट नर्क से आने वाले जीवों को गरीब परिवार में जन्म दिया जाता है जहाँ वे दुःख भरा जीवन बिताते हैं। उनके लिए भी मुक्ति 'नाम' में ही होती है। अगर वे भाग्य से किसी पूर्ण गुरु को पा लेते हैं उससे नाम ले लेते हैं तो वे भी अपने दुःखों से छुटकारा पा जाते हैं; नहीं तो उस जीवन के कर्मों के अनुसार उन्हें भी दूसरा जामा मिलता है।

अक्सर धार्मिक लोग स्वर्ग और नर्क की बातें करते हैं। वे लोगों में स्वर्ग की आशा जगाते हैं और नर्क के दुःखों से डराते हैं अगर हम अच्छे काम करते हैं दान-पुण्य करते हैं तो नर्क के दुःख के डर से करते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

कवनु स्वर्ग कवनु नरक विचारा सन्तन दोऊ रादे,
हम काहू की काणि न कढ़ते अपने गुरु परसादे।

हम सब स्वर्ग की बातें करते हैं लेकिन कोई यह नहीं जानता कि स्वर्ग कहाँ हैं? सच्चा स्वर्ग पूर्ण सतगुरु के चरणों में है। महात्मा अपने सेवकों में स्वर्ग की आशा पैदा नहीं करते और न ही नर्क के दुःखों से डराते हैं। महात्मा हमें समझाते हैं कि आपको न स्वर्ग में जाना न नर्क में जाना है, आपको सच्चखंड जाना है जहाँ से आपकी आत्मा आई है।

आपके आगे भाई गुरदास जी की बानी रखी जा रही है। इस बानी में आप गुरुमुख के गुणों और शान का वर्णन कर रहे हैं:

हउ तिसु विटहु वारिआ होदै ताणि जु होइ निताणा।

भाई गुरदास जी फरमाते हैं, ''मैं उन शिष्यों पर **बलिहार** जाता हूँ जिन पर सतगुरु ने सभी तरह की रूहानी ताकतों की दया बख्शी होती है। वे फिर भी सतगुरु की दया पर निर्भर रहते हैं अपने आपको सदा गुरु पर समर्पित करते हैं।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

रिद्धि सिद्धि नामें की दासी।

रिद्धियाँ-सिद्धियाँ 'नाम' की कमाई करने वाले के सामने हाथ जोड़कर खड़ी रहती हैं। सन्त-महात्मा अपना जीवन कुदरत के नियमों के मुताबिक बिताते हैं। अपने शिष्यों को भी यही शिक्षा देते हैं कि सर्दी-गर्मी कुदरत के नियमों के मुताबिक मालिक की मौज से आती है, आप इसे सहन करें। 'नाम' जपकर आपने जो ताकत प्राप्त की है उसे नष्ट न करें। नाम की कमाई को रिद्धियाँ-सिद्धियाँ दिखाने में बर्बाद न करें।

हउ तिसु विटहु वारिआ होदै माणि सु रहै निमाणा।
हउ तिसु विटहु वारिआ छोडि सिआणप होई इआणा।

सन्तमत में कामयाब होने के लिए हमें कुछ शर्तों का पालन करना पड़ता है। सबसे पहले हमें अहंकार छोड़ना पड़ता है। अपनी तालीम, औहदा और धन-दौलत का मान छोड़ना पड़ता है। सन्तमत में एम.ए. पास को भी पाँच साल के बच्चे की तरह बनना पड़ता है, सन्तमत में हम पाँच साल के बच्चे की तरह ही होते हैं।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''हे मालिक! मैं आपका बच्चा हूँ। आप मेरी गलतियों को माफ क्यों नहीं करते।'' जब तक बच्चा माता के आसरे होता है माता उसकी अच्छी देखभाल करती है। उसी तरह जब हम गुरु का आसरा ले लेते हैं गुरु हमारी संभाल करता है लेकिन हमारे अंदर मन बैठा है यह अपने आपको गुरु के आगे समर्पित नहीं होने देता। अगर किसी काम में हमें सफलता

मिलती है तो हमारा मन कहता है कि ये मेरी कोशिश से हुई है लेकिन जो बात हमारी समझ से बाहर हो जाती है और हम नहीं जानते कि हम क्या करें तो हम गुरु में दोष ढूंढना शुरू कर देते हैं और कहते हैं कि गुरु ने हमारी संभाल नहीं की।

हउ तिसु विटहु वारिआ खसमै दा भावै जिसु भाणा।

अब आप कहते हैं, ''मैं उन गुरु शिष्यों पर **बलिहार** जाता हूँ जो गुरु के भाणें में रहते हैं सदा परमात्मा के भाणें को स्वीकार करते हैं। चाहे उनका कितना भी नुकसान क्यों न हो जाए! चाहे उनके घर परिवार में कितनी भी दु:ख तकलीफें आ जाएं ऐसा शिष्य कहता है कि यह सब मेरे कर्मों का फल है पता नहीं इसमें मेरे गुरु ने मेरी कितनी मदद की है।''

हउ तिसु विटहु वारिआ गुरमुखि मारगु देखि लुभाणा।

आप प्यार से कहते हैं, ''मैं सदा ऐसे प्रेमियों पर **बलिहार** जाता हूँ जो प्रेम-प्यार से गुरु मार्ग पर चलते हैं।''

हउ तिसु विटहु वारिआ चलणु जाणि जुगति मिहमाणा।

आप कहते हैं अगर कोई मेहमान बनकर किसी के घर एक रात बिताता है तो वह उसे अपना घर नहीं समझ लेता वह जानता है कि वह मेहमान है। वह अपनी मंजिल को याद रखता है। जो शिष्य इस संसार में रहते हुए अपने आपको मेहमान मानते हैं उनके पास सब कुछ होते हुए भी वे उसे परमात्मा का समझते हैं और अपने आपको इस संसार में मुसाफिर समझते हैं।

दीन दुनी दरगह परवाणा।।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''ऐसा शिष्य संसार में रहते हुए सदा नाम की भक्ति करता है। वह जानता है कि 'शब्द-नाम' की

कमाई करना ही फायदेमंद है। उस गुरुमुख को परमात्मा यश-मान देता है। इस संसार में उसका जीवन सफल हो जाता है और जब वह संसार छोड़कर परमात्मा की दरगाह में जाता है तो वहाँ भी उसका मान-सम्मान होता है।''

सन्त हमें संसार छोड़ने और जिम्मेवारियों से दूर भागने के लिए नहीं कहते। वे हमें कायर नहीं बनाते। वे ये नहीं कहते कि जंगल में चले जाओ और अपनी जिम्मेवारियों को छोड़ दो। सन्त कहते हैं इस संसार में रहो, अपने परिवार में रहो और आपको जो जिम्मेवारियां मिली हैं उन्हें उठाओ इसके साथ-साथ नाम की भक्ति करो। लोगों से लेन-देन पूरा करो जिसका देना है उसे दो और जिससे लेना है उससे लो। इस संसार में पूरी हिम्मत से रहो।

हउ तिसु घोलि घुमाइआ गुरमति रिदै गरीबी आवै।
हउ तिसु घोलि घुमाइआ परनारी दे नेड़ि न जावै।

संसार में नाम से बढ़कर कुछ भी कीमती नहीं है। जिसके पास नाम का धन है और जो अपने आपको गरीब समझता है मैं ऐसे गुरसिख पर **बलिहार** जाता हूँ। ऐसा शिष्य सदा परमात्मा से यही विनती करता है, ''हे मालिक! आप बादशाह हैं सबके मालिक हैं मैं आपके सामने गरीब हूँ।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''परमात्मा आप पर दया करेगा। अगर आपके प्याले में थोड़ी सी जगह होगी तो वह उसे भर देगा। अगर आपके दिल में पहले से पाखंड, अहंकार है फिर उस दयालु को दया बरताने के लिए जगह कहाँ मिलेगी?''

आप पूर्ण महात्माओं की लेखनियां पढ़कर देखें! उनमें कितनी दीनता है। वे कहते हैं, ''हम पापी हैं गरीब हैं आपके दरवाजे पर आए हैं आप हमारी झोली भर दें।''

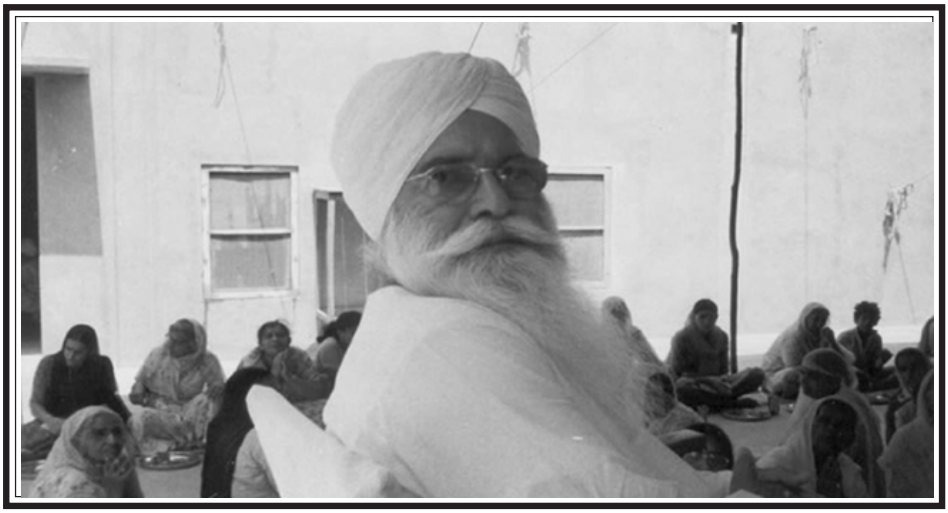

सन्त सर्वशक्तिमान होते हैं फिर भी उनमें बहुत दीनता होती है। हम गुरु नानकदेव जी, महाराज सावन सिंह जी, महाराज कृपाल सिंह जी की लेखनियां पढ़कर बहुत कुछ सीख सकते हैं। महाराज कृपाल सिंह जी कहते हैं:

मैथों चंगिआं जूतिआँ तेरिआं नाल तेरे जो हरदम रेहंदिया।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''मैं उन गुरुमुख पतियों पर **बलिहार** जाता हूँ जो दूसरे की पत्नियों की तरफ नहीं देखते और उन पत्नियों पर भी बलिहार जाता हूँ जो दूसरे के पतियों की तरफ नहीं देखती; वे एक-दूसरे को भाई-बहन की तरह समझते है।''

महाराज कृपाल ने हमें डायरी दी जिसका मतलब यह था कि हम अपने जीवन को पवित्र बनाएं और बुराईयों से बचें।

उह तिसु घोलि घुमाइआ परदरबै नो हथु न लावै।

भाई गुरदास ने अपनी जिंदगी का ज्यादा हिस्सा गुरुओं की संगत में बिताया था। आपने ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाई। सच्चे दिल और प्यार से गुरुओं की सेवा की।

आप कहते हैं, ''मैं उन गुरु शिष्यों पर **बलिहार** जाता हूँ जो दूसरे के धन को नहीं छूते और ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाते हैं। ऐसे शिष्य ही भजन में कामयाब होते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी एक बुढ़िया के बारे में बताया करते थे जो सूत कातकर अपनी रोजी-रोटी कमाती थी। वह अच्छी अभ्यासी थी अंदर जाती थी और उसे बहुत अच्छे अनुभव होते थे। अचानक यह सब कुछ होना बंद हो गया। उस बुढ़िया के पड़ोस में एक वेश्या रहती थी। वेश्या के दीपक जलाने से पहले वह अपने दीपक के प्रकाश से सूत काता करती थी लेकिन जब वेश्या का बड़ा दीपक जल जाता तो वह अपना दीपक बुझा देती और वेश्या के दीपक के प्रकाश में सूत कातकर रोजी-रोटी कमाने लगी।

एक बार एक अभ्यासी महात्मा उस बुढ़िया के घर आए। बुढ़िया ने उस महात्मा से पूछा, ''पहले मुझे अभ्यास में अच्छे अनुभव होते थे मैं अंदर जाती थी अब पता नहीं ऐसा क्या हो गया है? अब मुझे अभ्यास में अनुभव नहीं होते।''

महात्मा ने कहा, ''कहीं तुम ज्यादा बातें तो नहीं करने लगी? कुछ ऐसा तो नहीं करने लगी जो तुम्हें नहीं करना चाहिए? कहीं तुम अपनी रोजी-रोटी ईमानदारी से न कमा रही हो?'' और भी ऐसी बहुत सी कमियां गिनवाई जो अभ्यासी को दूर ले जाती हैं लेकिन उस बुढ़िया में सभी अच्छे गुण थे। महात्मा पता नहीं लगा पाए कि वह क्या गलती कर रही है? महात्मा ने कहा कि आज मैं यही रूककर देखूंगा कि क्या समस्या है?

जब शाम को अंधेरा हुआ तो बुढ़िया ने अपना दीपक जलाया और सूत कातना शुरू कर दिया। कुछ समय बाद उसकी पड़ोसन वेश्या का दीपक जला तो बुढ़िया ने अपना दीपक बुझा दिया। महात्मा बहुत समझदार थे। महात्मा ने कहा, ''माता! यहीं समस्या है तुम

अपनी पड़ोसन का प्रकाश अपने घर में आने देती हो जिससे तुम्हारी ईमानदारी की कमाई पर असर पड़ता है। जब वेश्या दीपक जलाए तो तुम अपना दरवाजा बंद कर लिया करो और अपने दीपक के प्रकाश में सूत कातकर रोजी-रोटी कमाओ।''

महान सतगुरु किस तरह ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाया करते थे। कबीर साहब ने जिंदगी भर ताना बुनकर, महात्मा रविदास ने जूते बनाकर और गुरु नानकदेव जी ने खेती करके रोजी-रोटी कमाई। हमारे सतगुरु सावन सिंह जी और कृपाल सिंह जी ने फौज में नौकरी की, सरकारी पेंशन से गुजारा किया।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जो ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाते हैं और अपनी कमाई को संगत में लगाते हैं वे सच्चे मार्ग को जानते हैं।''

हउ तिसु घोलि घुमाइआ परनिंदा सुणि आपु हटावै।

आप कहते हैं, ''मैं उन शिष्यों पर **बलिहार** जाता हूँ जो दूसरों की निन्दा नहीं करते। जो परमात्मा के प्यारों की निन्दा करते हैं उन्हें बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।''

हउ तिसु घोलि घुमाइआ सतिगुर दा उपदेसु कमावै।

आप कहते हैं, ''मैं उन पर **बलिहार** जाता हूँ जो सच्चे हृदय से सतगुरु के दिए हुए नाम की कमाई करते हैं।''

हउ तिसु घोलि घुमाइआ थोड़ा सवै थोड़ो ही खावै।
गुरमुखि सोई सहजि समावै।।

भाई गुरदास जी प्यार से समझाते हैं, ''मैं उन गुरु शिष्यों पर **बलिहार** जाता हूँ जो थोड़ा खाते हैं थोड़ा सोते हैं। ऐसे शिष्य आसानी से सहज अवस्था पा लेते हैं और सच्चखंड पहुँच जाते हैं।''

***